पाठ-10

रब्बा मींह दे-पानी दे

अभ्यास

1. नीचे गुरुमुखी और देवनागरी लिपि में दिये गये शब्दों को पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखने का अभ्यास करें :-

- ਰੱਬ - रब्बा
- ਪਾਣੀ - पानी
- ਕਿਸ਼ਤੀ - कश्ती
- ਲੂ - लू
- ਹਰਿਆਲੀ - हरियाली
- ਪ੍ਦੂਸ਼ਿਤ – प्रदूषित

2. नीचे एक ही अर्थ के लिए पंजाबी और हिन्दी भाषा में शब्द दिये गये हैं । इन्हें ध्यान से पढ़ें और हिन्दी शब्दों को लिखें :-

- ਝੋਨਾ - चावल की फसल
- ਪਸ਼ੂ - मवेशी
- ਰੱਬਾ - परमात्मा
- ਫਜ਼ੂਲ - व्यर्थ
- ਦੂਜਿਆਂ ਦਾ ਦੁੱਖ - पर दुःख
- ਸਿੱਖਿਆ – सीख

3. शब्दार्थ :-

- रब्बा - प्रभु , परमात्मा
- दूना - दुगुना

- पर दुःख - दूसरों का दुःख
- मींह - वर्षा
- मवेशी - पशु
- सीख - शिक्षा

4. इन प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें :-

(क) इस कविता में ईश्वर से क्या प्रार्थना की गई है ?

उत्तर - इस कविता में कवि ने ईश्वर से वर्षा लाने की प्रार्थना की है ।

(ख) 'खेतों में सोना' का क्या अर्थ है ?

उत्तर - खेतों में सोना का अर्थ है - अच्छी फसल होना ।

(ग) पानी के बिना मवेशी और खेतों पर क्या पर प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर - पानी के बिना मवेशी मर जाते हैं और खेत सूख जाते हैं ।

(घ) इस कविता में देश के प्रत्येक नागरिक को क्या सीख दी गई है ?

उत्तर - इस कविता में देश के प्रत्येक नागरिक को पानी नष्ट, प्रदूषित और व्यर्थन करने की सीख दी गई है ।

(ङ) पानी का स्वभाव कैसा है ?

उत्तर - पानी का स्वभाव मिलनसार होता है । वह जिसमें मिलता है , उसी का रूप धारण कर लेता है

5.पर्यायवाची शब्द लिखें :-

पानी - जल , नीर

मींह - वर्षा , बारिश, बरखा

सीख - शिक्षा , ज्ञान

जन - लोग , नर

दुःख - पीड़ा , कष्ट

आँख - नेत्र , लोचन , नयन

धरती - भू , भूमि , धरा , पृथ्वी

सप्रसंग व्याख्या

1. रब्बा मींह दे-पानी दे, पानी दे, पानी दे ।

लू से झुलसी धरती को , इक नई ज़िन्दगानी दे ।।

प्रसंग - यह काव्य - पँक्तियाँ विनोद1 शर्मा द्वारा रचित ' रब्बा मींह दे - पानी दे ' शीर्षक कविता से ली गई हैं । इसमें कवि ने ईश्वर से वर्षा लाने की प्रार्थना की है ।

व्याख्या - कवि ईश्वर से प्रार्थना कर कहते हैं कि हे प्रभु ! आप वर्षा करें और पानी दीजिए । आप इतना पानी दीजिए जिससे गर्मी एवं लू की लपटों से जलती हुई धरती शीतल हो जाए और लोगों को एक नया जीवन मिले । आप सबको नई ज़िन्दगी प्रदान करो ।

2. पानी से खेतों..... नई रवानी दे ।

प्रसंग - यह काव्य - पँक्तियाँ विनोद शर्मा द्वारा रचित ' रब्बा मींह दे - पानी दे ' शीर्षक कविता से ली गई हैं । इसमें कवि ने 'जल ही जीवन है ' बताते हुए प्रभु से वर्षा लाने की प्रार्थना की है ।

व्याख्या - हे प्रभु ! पानी से ही खेतों में सोना उगता है । इसी से गेहूँ नाचने लगता है और चना गाने लगता है । पानी से ही सब कुछ दुगुना होता है बिना पानी के कत्था और चुना भी बेकार है । पानी ही जीवन है । यही जीवन का आधार है । पानी के नष्ट होने से ही सब कुछ नष्ट हो जाएगा । हे प्रभु ! आप आकर जीवन की किश्ती को नई रवानी प्रदान करो ।

3. पानी से हरियाली .....यह सीख सुहानी दे ।।

प्रसंग - यह काव्य - पँक्तियाँ विनोद शर्मा द्वारा रचित ' रब्बा मींह दे - पानी दे ' शीर्षक कविता से ली गई हैं । इसमें कवि ने प्रभु से वर्षा लाने की प्रार्थना की है ।

व्याख्या - कवि कहता है कि पानी से ही खेतों में हरियाली और खुशहाली होती है । मवेशी , वन और पेड़-पौधे का पानी के बिना जीवन नष्ट हो जाएगा । कवि लोगों को प्रेरणा देते हुए कहता है कि आओ हम सब मिलकर यह प्रण लें कि हमें पानी गंवाना चाहिए । हे प्रभु ! इस देश के प्रत्येक व्यक्ति को यह सुहानी शिक्षा दें कि न पानी को नष्ट करे और न ही प्रदूषित करें । हे प्रभु ! वर्षा दीजिए ।

4. चाहे इसका रंग.....हर आँख को पानी दे ।

प्रसंग - यह काव्य - पँक्तियाँ विनोद शर्मा द्वारा रचित ' रब्बा मींह दे - पानी दे ' शीर्षक कविता से ली गई हैं । इसमें कवि ने प्रभु से लोगों में दूसरे के दुःख को समझने की प्रार्थना की है ।

व्याख्या - कवि कहता है कि चाहे पानी का अपना कोई रंग नहीं है उसकी अपनी कोई उमंग नहीं है । फिर भी यह जिस रंग में मिल जाता है उसके रंग में ही खिल जाता है । दुःख में यह आँखों में आ जाता है और खुशी में रुला देता है । हे प्रभु ! हर कोई दूसरों के दुःख को अपना दुःख समझे इसलिए हर आँख में पानी आ जाए । हे प्रभु ! आप वर्षा प्रदान करो ।

शिक्षा विभाग, पंजाब

मार्गदर्शक:

डा. सुनील बहल,

सहायक निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी. पंजाब)

प्रस्तुतकर्ता:

विनोद कुमार

हिंदी शिक्षक,

सरकारी हाई स्कूल बुल्लेपुर,

खन्ना-2 लुधियाना .

संशोधन:

अनवर हुसैन

हिंदी शिक्षक,

सरकारी माध्यमिक पाठशाला,

खरौड़ा, फतेहगढ़ साहिब ।